एन.सी.ई.आर.टी.

समाचार

अप्रैल – 2007

'सार्क' देशों में शांति शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियाँ

'सार्क' क्षेत्र में शांति शिक्षा को बढ़ावा देने से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एनसीईआरटी के निदेशक प्रो. कृष्णकुमार की अध्यक्षता में दिनांक 26 व 27 फ़रवरी 2007 को एक परामर्श बैठक हुई। इस बैठक में विख्यात शिक्षाविदों, विद्वानों, शांति शिक्षा के विशेषज्ञों और शांति शिक्षा विषयक फोकस ग्रुप के सदस्यों तथा एनसीईआरटी के संयुक्त निदेशक ने भाग लिया। अध्यक्ष, डीईपीएफई इस बैठक के संयोजक थे।

सदस्यों को उन व्यापक कार्यक्रमों से अवगत कराया गया जो शांति के लिए शिक्षा विषयक पोजीशन पेपर के आधार पर प्रारंभ किए गए थे। सदस्यों ने सुझाव दिया कि 8–10 लोगों का एक क्षेत्रवार निकाय बना लिया जाए जो उस क्षेत्र में हो रहे कार्यों पर नज़र रखे। यह भी बताया गया कि 'सार्क' क्षेत्र में चल रहे अंतर्द्वंद्व पर भी अनुसंधान किए जाने की आवश्यकता है। सदस्यों की राय थी कि अब तक जो कुछ किया जा चुका है, उसके बारे में जानकारी का आदान–प्रदान और प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए। इसके लिए अंतर्द्वंद्व की प्रकृति और अवस्थिति के बारे में प्रचार, मौजूदा सामग्री पर डाटाबेस का विकास, नए कार्यक्रम, मौजूदा सामग्री का अनुवाद तथा केस अध्ययनों की जानकारी आवश्यक है। यह भी सुझाव दिया गया कि विषय विशेषज्ञों/सामाजिक वैज्ञानिकों का आदान–प्रदान और अध्यापकों के प्रशिक्षण, पठन सामग्रियों एवं संकलनों के विकास आदि से संबद्ध भारतीय अध्याय का आयोजन किया जाए।

एनसीईआरटी ने इस कार्यक्रम को इसलिए आरंभ किया ताकि सार्क देशों के बीच अनुभव का आदान–प्रदान हो सके तथा सार्क देशों में शांति शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सहयोग के आधार पर संरचनाएँ तैयार की जा सकें।

विज्ञान वार्ता

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

भारत के महान भौतिकीविद सर सी.वी. रमन द्वारा की गई 'रमन प्रभाव' की नयी खोज के उपलक्ष्य में प्रति वर्ष 28 फ़रवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है।

इस दिन, विज्ञान के विभिन्न मुद्दों पर मुख्यत: विचार करने का अवसर मिलता है। इसका बुनियादी उद्देश्य विज्ञान के महत्त्व के संदेश का प्रसार करना और आम जनता को उसके अनुप्रयोगों से अवगत कराना है।

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं :
(i) अनुसंधान और विकास,
(ii) प्रशिक्षण तथा (iii) विस्तार।
यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों में प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है–
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

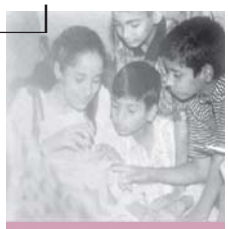

इस वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का मुख्य विषय था–प्रति बूँद अधिक उपज। इस विषय का उद्देश्य एक ऐसे पर्यावरण-जल-जागरूक समाज का निर्माण था जो जल का महत्त्व समझ सके। इसलिए मनुष्य के प्रत्येक कार्यकलाप में जल का इष्टतम उपयोग किया जाना चाहिए और हर तरह से उसका संरक्षण एवं संग्रह किया जाना चाहिए।

एनसीईआरटी के विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग ने इस अवसर पर एक लोकप्रिय व्याख्यान का आयोजन किया जिसका विषय था–'बूँद-बूँद का लेखा लो' (Making each drop count) और वक्ता थे : डॉ. ए.के. सिंह, परियोजना निदेशक, जल प्रौद्योगिकी केंद्र, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नयी दिल्ली।

अपने विचार-विमर्श में डॉ. ए.के. सिंह ने कहा कि भारत के पास दुनिया में सबसे अधिक सिंचित भूमि है और उसकी उत्पादकता लगभग 2.5 टन प्रति हेक्टेयर है। इस उत्पादकता को विशेष रूप से मिट्टी तथा जल संबंधी निविष्टियों के उचित प्रबंध से 4 टन प्रति हेक्टेयर तक बढ़ाया जा सकता है। डॉ. ए.के. सिंह ने उन तरीकों पर भी चर्चा की जिनके द्वारा गंदे या अपशिष्ट जल को फ़सल तथा भूमि को कोई हानि पहुँचाए बिना, सिंचाई के लिए फिर से काम में लिया जा सकता है। यह एक अन्य पहलू है जिसपर भलीभाँति विचार किया जाना चाहिए। इसके अलावा हमें अपने भूमिगत जल की घटिया किस्म पर भी ध्यान है।

इस व्याख्यान को राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अनेक संकाय सदस्यों और नवयुग स्कूल, कैंब्रिज स्कूल, आर्मी पब्लिक स्कूल, सेंट मैरीज स्कूल और एपीजे स्कूल के अध्यापकों ने सुना।

इस दिवस को मनाने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान 'नीरी' ने अपने प्रधानाचार्य प्रो. डी.एस. भट्टाचार्जी की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की। इसमें 'नीरी के संकाय के सदस्यों के साथ-साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र के भिन्न-भिन्न राज्यों के विज्ञान अध्यापक उपस्थित थे। मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'प्रति बूँद अधिक उपज' के अनुरूप ही, प्रो. एम.के. शतपथी ने 'संधारणीय कृषि : जल संरक्षण एवं फ़सल उत्पादकता' विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

विज्ञान पत्रिका पर कार्यशाला

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग में 28 से 31 मार्च 2007 तक एक चार-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के भिन्न-भिन्न राज्यों से 10 लेखकों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और तमिलनाडु के विशेषज्ञ अपने निबंधों के माध्यम से पहले ही योगदान दे चुके थे। कुल मिलाकर 30 रचनाओं को भिन्न-भिन्न विषय-क्षेत्रों में चुना गया। इनमें से कुछ विषय थे–जल तथा ऊर्जा का संरक्षण; पूर्वोत्तर भारत के पेड़-पौधे और जीव-जंतु; प्रदूषण; भूमंडल की उष्णता; स्वास्थ्य एवं सुपोषण; जलजगत; आपदा प्रबंधन; भारत के वैज्ञानिक; वैज्ञानिक आविष्कार एवं शोध; भेषज विज्ञान; समुद्र विज्ञान; सूचना एवं प्रौद्योगिकी, उद्विकास और अस्तित्व, सौर मंडल के ग्रह; मानव जीवन में वनों का महत्त्व आदि। चुनी गई रचनाओं को संकलित करके एक पांडुलिपि तैयार की गई। इस कार्यक्रम का समन्वय संयुक्त रूप से डॉ. बी. देवी (डीसीडीईवीई) और डॉ. दक्ष. एम. परमार ने किया।

जनसेक-2006 के प्रदर्शों ने बाल विज्ञान कांग्रेस-2007 में पुरस्कार जीते

23 से 26 जनवरी 2006 तक पुणे में आयोजित जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान बाल प्रदर्शनी ('जनसेक') 2006 से चुने गए 20 सर्वोत्तम प्रदर्शों को बाल विज्ञान कांग्रेस 2007 में प्रदर्शित किया गया। यह प्रदर्शनी 3 से 7 जनवरी 2007 तक अन्नमलै विश्वविद्यालय चिदंबरम, तमिलनाडु में 94वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन के साथ मिलकर आयोजित की गई थी। 'जनसेक'-2006 के निम्नलिखित प्रदर्शों को इस कांग्रेस में गुणवत्ता प्रमाणपत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

1. दूरदराज के ग्रामीण इलाकों के लिए एक सरल कम लागत किंतु उच्च संभाव्यता वाली बहु-प्रयोजनी सिंचाई परियोजना
   स्कूल का नाम : कुपवाड़ा पब्लिक स्कूल, सोगाम रोड, कुपवाड़ा
   छात्र का नाम : श्री बिलास रशी खान
   अध्यापक का नाम : श्री दिप्येन्दु मेसुआ
2. फेफड़ों का गणितीय मॉडल
   स्कूल का नाम : पूरनचंद्र विद्या निकेतन, हेमंत विहार, कानपुर
   छात्र का नाम : सुश्री मेघा मिश्रा
   अध्यापक का नाम : श्रीमती सुषमा जायसवाल

राष्ट्रीय संचालन समिति की बैठक

राष्ट्रीय संचालन समिति ने एनसीईआरटी नयी दिल्ली में 16 मार्च 2007 को हुई अपनी एक-दिवसीय बैठक में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के प्रचार-प्रसार के लिए एनसीईआरटी द्वारा प्रारंभ किए गए विभिन्न क्रियाकलापों पर विचार किया। समिति ने समीक्षा प्रक्रिया की प्रगति पर चर्चा की। इसके अलावा, उसने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 (प्रारूप) के लघु संस्करण पर भी विचार-विमर्श किया। उक्त पाठ्यचर्या के प्रचार-प्रसार के लिए एनसीईआरटी के विभिन्न विभागों द्वारा उठाए गए बहु-विध कदमों और राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के प्रयत्नों को मान्यता प्रदान करते हुए, समिति ने देशभर में भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए अनेक रचनात्मक सुझाव दिए।

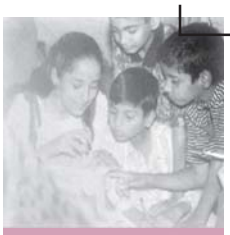

भाषा और उससे परे

माध्यमिक स्तर पर अंग्रेज़ी का अध्यापन

माध्यमिक स्तर पर अंग्रेज़ी के अध्यापन में पूर्वोत्तर राज्यों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के अभिविन्यास के लिए शिलांग के डॉन बोस्को यूथ सेंटर में 5 से 9 मार्च 2007 तक एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूर्वोत्तर क्षेत्र के विभिन्न डाइट/एससीईआरटी संस्थानों से नौ अध्यापकों ने इसमें भाग लिया। प्रो. ए.के. मिश्रा ने एनसीएफ-2005 में निहित भाषा की शिक्षा के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के डॉ. पी. बरुआ ने अंग्रेज़ी भाषा शिक्षण के तरीकों पर विस्तार से चर्चा की। सीआईईएफएल, शिलांग के डॉ. जे. चटर्जी और डॉ. टी.के. बामन ने पठन और श्रवण कौशलों पर बल दिया। डॉ. बामन ने द्वितीय भाषा के अध्यापन एवं अधिगम के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक पक्ष पर भी चर्चा की। 'नेहू', शिलांग के डॉ. पी. थुंगम ने नाट्यीकरण रीति से भाषाएँ सिखाने का एक नवाचारात्मक तरीका प्रस्तुत किया। प्रशिक्षणार्थियों से कहा गया कि वे अपने चुने हुए प्रसंग पर आधारित कोई नाट्यकृति प्रस्तुत करें। सुश्री मेलिसा वालांग (डीएलएसएसएपीई) ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

श्रवण-बाधितों के लिए संकेत भाषा

जब विकलांगता की बात करते हैं तो हमें विकलांगों के प्रति अपनी अभिवृत्ति (रुख) को बदलना होगा :

विशेष शिक्षा के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम दिनांक 19 से 23 मार्च 2007 तक सेंट फ्रांसिस माउंट, उम्बिर में आयोजित किया गया।

संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र से 43 प्रशिक्षणार्थियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। संसाधन व्यक्ति ये थे–श्री विक्रम जीत, एवाइ एनएनआईएच, मुंबई, सुश्री सोना चौधुरी, एसएंडसीएचएच, शिलांग; श्री कार्मो नोरोना, निदेशक, बेढानी सोसाइटी, शिलांग; एसआर, मर्ले टॉम, निदेशक, फेरांडो स्पीच एंड हीआरिंग सेंटर, शिलांग; प्रो. भू. कंवर, नीरी; और नीरी के अन्य संकाय सदस्य। संकेत भाषा के लिए दो दुभाषिए थे : एसआर, सिनी ऐंटॉनी, फेरांडो स्पीच एंड हीयरिंग सेंटर शिलांग और सुश्री कैथलीन जो यूएसए से आकर फेरांडो में काम कर रही हैं। इस कार्यक्रम का उद्घाटन उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री आर.जी. लिंगदोह द्वारा किया गया। अपने भाषण में श्री लिंगदोह ने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए 'नीरी' के प्रयत्नों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि इससे श्रवणशक्ति-बाधित बच्चों को शिक्षा देने के तरीकों में सुधार होगा। नीरी के प्रधानाचार्य प्रो. डी.एस. भट्टाचार्जी ने अपने भाषण में कहा कि ऐसे ही कार्यक्रम पूर्वोत्तर क्षेत्र के सभी राज्यों में चलाए जाने चाहिए। प्रो. यू. कंवर ने एनसीएफ-2005 के अनुसार, समवेत शिक्षा के महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला। श्री कार्मो नोरोना ने भी समवेत शिक्षा के मुद्दों पर चर्चा की और सबके लिए शिक्षा के अधिकार पर बल दिया।

एस आर मर्ले ने शिक्षा के विकास में श्रवणशक्ति खो जाने के रोगात्मक कारणों और परिणामों का उल्लेख किया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण कक्ष में बहरे छात्रों के साथ व्यवहार करने में उपयोगी प्रक्रियाओं से अवगत कराया और बधिर शिक्षा को मुख्यधारा में लाने के बारे में चर्चा की। कार्यक्रम के समन्वयकर्ता ने देश में बधिर शिक्षा के इतिहास और अब तक हुए शोधकार्यों पर प्रकाश डाला। डॉ. एस.देवी ने द्वितीय भाषा के शिक्षण में प्रथम भाषा के महत्त्व की चर्चा की; श्रवण-बाधितों के मामले में संकेत भाषा प्रथम भाषा होती है। कार्यक्रम का शेष भाग श्रवण-बाधित संसाधन व्यक्तियों और दुभाषियों द्वारा संपन्न किया गया। संसाधन व्यक्तियों ने बुनियादी भारतीय संकेत भाषा, जिसे 'ए-लेवल' कहा जाता है, के बारे में बताया। इस पाठ्यक्रम की चार इकाइयाँ पूरी की गईं। इस कार्यक्रम में भारत के मुख्य भागों की तुलना में इस पूर्वोत्तर क्षेत्र में संकेत भाषा के भिन्न-भिन्न रूपों के बारे में भी चर्चा की गई। प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में बधिर शिक्षा के विषय में शोध एवं कार्यशाला जैसे कार्यक्रम की बहुत आवश्यकता है।

बहु-भाषायी शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम

बच्चे के संज्ञानात्मक विकास और राष्ट्रीय समरसता के संसाधनों के रूप में बहु-भाषायी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के प्रमुख राजकीय कार्यकर्ताओं का एक अभिविन्यास कार्यक्रम 12 से 16 मार्च 2007 तक डॉन बोस्को यूथ सेंटर में आयोजित किया गया। मणिपुर, असम, मिजोरम और मेघालय के 12 प्रशिक्षणार्थियों ने इसमें भाग लिया। जे.एन.यू. दिल्ली के प्रो. ए.के. मोहंती ने बच्चे के संज्ञानात्मक विकास के लिए बहु-भाषायी शिक्षा और मातृभाषा के महत्त्व पर ध्यान केंद्रित किया। मणिपुर विश्वविद्यालय के प्रो. सी.एच. यवंता ने बहु-भाषायी शिक्षा की स्थिति से निपटने के लिए भाषायी पद्धतियों एवं रीतियों के विषय में चर्चा की। सेंट एडमंड्स कॉलेज, शिलांग के डॉ. एस. लामारे ने भारत में, विशेष रूप से पूर्वोत्तर क्षेत्र में, बहु-भाषायी शिक्षा के विकास के महत्त्व पर बल दिया।

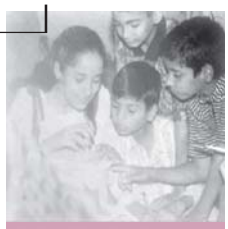

मानव अधिकार परामर्शदाता डॉ. आर.के. ब्रजनंद ने बच्चों तथा अल्पसंख्यकों के अधिकारों के बारे में बताया और पूर्वोत्तर क्षेत्र से कई उदाहरण प्रस्तुत किए। डीएलएसएसएपीई नीरी के प्रो. ए.के. मिश्रा ने भाषायी शिक्षा के संदर्भ में रचनावाद और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 पर चर्चा की जबकि उसी विभाग के डॉ. एस.सी. रॉय ने टीएलएम के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। प्रशिक्षणार्थियों से राज्य–विशेष की समस्याओं का विशद विवेचन करने के लिए कहा गया और परस्पर सक्रिय प्रक्रिया के आधार पर सुझाव प्रस्तुत किए गए। डॉ. सीएच. सरजूबाला देवी ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

घरेलू भाषा और स्कूली भाषा के बीच की खाई को पाटने के लिए मैन्युअल

प्रारंभिक स्तर पर मैन्युअल का विकास करने के लिए नीरी शिलांग में 26 से 29 मार्च 2007 तक एक चार–दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। बाहर से आने वाले विशेषज्ञों में शामिल थे : शिलांग कॉलेज, मदर ऐजेलिस स्कूल, तूरा और 'डाइट' संस्थान, सोहरा के संकाय सदस्य, अपर प्राइमरी गवर्नमेंट स्कूल, जयन्तिया हिल्स, शिलांग के प्रधानाचार्य और मणिपुर से प्रो. एम.एस. निगोंबा। नीरी के विशेषज्ञों में थे : प्रो. ए.के. मिश्र, डीएलएसएसएपीई; सुश्री मेलिसा वालांग, डॉ. सीएच. सरजूबाला देवी, डीएलएसएसएपीई; श्री विजयकुमार, डीसीडीईवीई और दो जेपीएफ थे। संसाधन व्यक्तियों ने मेघालय बोर्ड द्वारा प्रयुक्त पाठ्यपुस्तकों (अंग्रेज़ी) का विश्लेषण किया, शब्दावलियों की सूची बनाई, खासी और गारों में व्याख्या की। उन्होंने पाठ में सम्मिलित वैयाकरणिक संरचनाओं का भी विश्लेषण किया। मैन्युअल को अंतिम रूप देने से पहले समन्वयकर्ता उसे मेघालय के कुछ चुने हुए स्कूलों में भी आजमाएँगे।

पूर्वोत्तर में अंग्रेजी भाषा के अध्यापन के लिए संसाधन सामग्रियाँ

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय भाषा केंद्र गुवाहाटी में, दिनांक 5 से 8 फ़रवरी 2007 तक प्रारंभिक स्तर के लिए संसाधन सामग्रियाँ तैयार करने हेतु, एक चार–दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड की 'डाइट'। एससीईआरटी संस्थाओं के 16 मास्टर प्रशिक्षकों और असम के कुछ अध्यापकों ने भाग लिया। डीएलएसएसएपीई के प्रो. ए.के. मिश्रा और डॉ. सीमा सैगल ने कार्यशाला के कार्य का समन्वय किया।

मार्गदर्शन और उपबोधन/परामर्श

क्षमता निर्माण कार्यक्रम

नयी दिल्ली में एनसीईआरटी के एनआईई परिसर में 14 से 16 मार्च 2007 तक एक क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके उद्देश्य थे : (1) मार्गदर्शन और उपबोधन में कार्यरत प्रमुख कार्मिकों को उनके अपने राज्यों में मार्गदर्शन संबंधी क्रियाकलापों को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से नेतृत्व, समर्थन सहायता एवं पर्यवेक्षकीय कार्यों के योग्य बनाना; (2) मार्गदर्शन संबंधी कार्यक्रम के लिए कार्यान्वयन से संबंधित अनुभवों के आदान–प्रदान के लिए एक सामान्य मंच की व्यवस्था करना। इस कार्यक्रम में 15 व्यक्तियों ने भाग लिया जिनमें राज्यस्तरीय मार्गदर्शन अधिकारियों/राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों के निदेशक, सहायक निदेशक, ज़िला उपबोधक, उपबोधक प्रभारी और मार्गदर्शन तथा उपबोधन के क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य प्रमुख संसाधन व्यक्ति शामिल थे। भाग लेने वालों में आठ उत्तरी राज्यों–उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पंजाब, चंडीगढ़, दिल्ली और राजस्थान के सहभागी शामिल थे। उन्हें एनसीएफ–2005 के संदर्भ में मार्गदर्शन और उपबोधन के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से परिचित कराया गया और देश में उपलब्ध मार्गदर्शन तथा उपबोधन संबंधी सेवाओं से अवगत कराया गया और यह भी बताया गया कि सहभागी राज्यों में कैसी मार्गदर्शन पद्धतियाँ अपनाई जा रही हैं और सरकारी तथा गैर–सरकारी संगठनों द्वारा अकादमिक तनाव, वृत्तिक सूचना, बाल यौन शोषण, आपदा प्रबंधन और एचआईवी/एड्स की रोकथाम जैसे मौजूदा मुद्दों के संबंध में क्या–क्या कार्रवाई की जा रही है और किस प्रकार की उपबोधन विधियाँ/पद्धतियाँ अपनाई जा रही हैं। तदुपरांत कार्यक्रम के भागीदारों ने अपने–अपने राज्यों में कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त कार्य–योजनाएँ तैयार कीं।

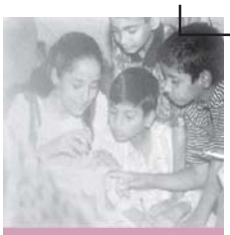

मार्गदर्शन और उपबोधन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

एनसीईआरटी, नयी दिल्ली के शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग ने देश में राज्यों के शिक्षा विभागों और सार्क तथा अन्य एशियाई देशों के शिक्षा विभागों के अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और अप्रशिक्षित मार्गदर्शन कार्मिकों के लिए एक छह महीने का डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया। यह पाठ्यक्रम 'अध्यापक उपबोधक के रूप में' के आदर्श पर आधारित था क्योंकि छात्रों के मार्गदर्शन एवं परामर्श देने में अध्यापक को एक विशेष भूमिका अदा करनी होती है। तथापि, उन्हें इस हेतु व्यावसायिक अभिविन्यास एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य अध्यापक को विशेषज्ञ ही नहीं बल्कि मार्गदर्शक एवं परामर्शदाता बनने की शक्ति प्रदान करना है। इससे आशा की जाती है कि अध्यापकों की अभिवृत्तियों एवं अवबोधों तथा छात्रों के साथ उनके व्यवहार करने के तरीकों में अंतर आएगा। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम 12 सितंबर 2006 से 12 मार्च 2007 के लिए चलाया गया। कुल मिलाकर 36 अध्यापकों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया जिनमें से सात भूटान की सरकार द्वारा और पाँच श्रीलंका की सरकार द्वारा प्रतिनियुक्त किए गए थे और शेष 24 अध्यापक देश के अन्य भागों से थे।

इस पाठ्यक्रम के प्रमुख अवयव थे : मार्गदर्शन एवं उपबोधन की प्रक्रियाएँ एवं कार्यविधियाँ, मानव समायोजन तथा वृत्तिक जीवन विकास के प्रमुख सिद्धांत और परिप्रेक्ष्य, उपबोधन में उनका अनुप्रयोग, मनोवैज्ञानिक आकलन एवं मूल्यांकन और मार्गदर्शन तथा उपबोधन संबंधी व्यवहारों में वृत्तिक जीवन संबंधी सूचना का उपयोग/उपबोधन कौशलों के विकास पर अतिथि वक्ताओं के व्याख्यान एवं कार्यशालाएँ आयोजित की गईं जिससे पाठ्यक्रम की विषयवस्तु अधिक संपन्न हो गई। प्रशिक्षणार्थियों को क्षेत्रगत यात्राओं और मुंबई की एक शैक्षिक यात्रा पर भी ले जाया गया, जहाँ उन्होंने अनेक व्यावसायिक संगठनों का अवलोकन किया। भिन्न-भिन्न देशों के बीच अनुभवों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक सम्मेलन आयोजित किए गए।

महिला अध्ययन

भारतीय नारियाँ 1875-1947 एक वृत्तचित्र

एनसीईआरटी के महिला अध्ययन विभाग ने महिला विकास अध्ययन केंद्र और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर के साथ मिलकर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में एक प्रदर्शनी आयोजित की जो 'भारतीय नारियाँ 1875-1947–वृत्तचित्र' की कथावस्तु पर केंद्रित थी; इसमें 250 से अधिक दृश्य प्रदर्शित किए गए थे। इस विषय पर आधारित संग्रहालयी फ़ोटोग्राफ़ देखने में तो सुंदर थे ही, साथ ही उनसे देश के बहुपक्षीय इतिहास को जानने में भी मदद मिली।

प्रदर्शनी में प्रस्तुत कुछ दुर्लभ चित्र :

- परिवार की परिकल्पना
- अधिगम अनुभव
- सुदूरवर्ती संसार
- राष्ट्रीय आंदोलन
- मध्यरात्रि की ओर

कुछ विशिष्ट महिलाओं पर चार फलक थे–विख्यात समाज सुधारक पंडित रामाबाई; दो प्रारंभिक महिला फ़ोटोग्राफ़र–देबालीना मजूमदार और अन्नपूर्णा दत्ता, एक पथप्रदर्शक डॉक्टर–द्वारकाबाई कमलाबार और स्कूल अध्यापिका–साराह मैसी।

प्रदर्शनी का उद्घाटन शिक्षा में लैंगिक मुद्दों से संबंधित फोकस ग्रुप की सदस्य प्रो. रामेश्वरी वर्मा द्वारा किया गया और फ़ोटोग्राफ़र श्री टी.एस. सत्यन मुख्य अतिथि थे।

घटता हुआ लिंग अनुपात (स्त्री भ्रूणहत्या)–चिंताएं एवं रणनीतियाँ

एनसीईआरटी के महिला अध्ययन विभाग ने 28 फ़रवरी से 2 मार्च 2007 तक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में 'घटता हुआ लिंग अनुपात (स्त्री-भ्रूणहत्या)–चिंताएँ एवं रणनीतियाँ' विषय पर एक तीन-दिवसीय राष्ट्रीय परामर्श बैठक का आयोजन किया। इसमें 52 समाजविज्ञानियों, शिक्षाविदों, डॉक्टरों, नीति योजनाकारों और प्रशासकों, पत्रकारों, अधिवक्ताओं धार्मिक नेताओं, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं ने स्त्री-भ्रूणहत्या के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों पर विचार-विमर्श किया।

विचार-विमर्श के केंद्रबिंदु थे :

- स्त्री-भ्रूणहत्या–घटते हुए लिंग अनुपात के मुख्य कारक : एक विवेचनात्मक विश्लेषण।
- वैधिक दृष्टिकोण : कार्य तथा लुप्तांश और सुझाए गए कार्य बिंदु।
- चिकित्सकीय दृष्टिकोण : नैतिकता, वास्तविकता और अंत:क्षेप रणनीतियाँ।
- सामाजिक दृष्टिकोण : प्रयत्न, अंत:क्षेपी उपाय, भावी रणनीतियाँ।
- शैक्षिक दृष्टिकोण : वस्तुस्थिति और संभावित स्थिति
- मीडिया की भूमिका : एक विवेचनात्मक विश्लेषण और संभावित अंत:क्षेप।
- राजनीतिक दृष्टिकोण : अंत:क्षेप और प्रतिबद्धताएँ।
- धार्मिक दृष्टिकोण : तथ्य एवं कार्य।

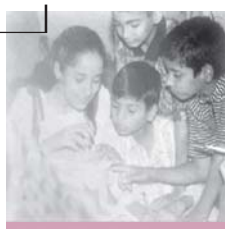

आगे की जाने वाली कार्रवाई पर विचार करने के लिए एक विचारवेशक सत्र रखा गया।

परामर्श के द्वारा प्राप्त कार्य बिंदु

स्त्री-भ्रूणहत्या की घटनाओं को रोकने के लिए एक कंसोर्टियम बनाने की आवश्यकता महसूस की गई। इस कंसोर्टियम में इस समस्या के भिन्न-भिन्न पहलुओं से जुड़े व्यक्तियों को शामिल किया जाए जो इस मुद्दे को आगे बढ़ाएँ, समुचित कार्रवाई करें। भिन्न-भिन्न धर्मों में लैंगिक परिप्रेक्ष्य में वाद-विवाद करें जिससे कि उपदेश और वास्तविकता में अंतर की जानकारी हो।

- घटते हुए बाल स्त्री-पुरुष अनुपात को ठीक करने के लिए सरकार को लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए।
- जन्म के समय लैंगिक अनुपात और शिशु मृत्युदर में लैंगिक अंतर को स्वास्थ्य तथा लैंगिक समता के सूचकों के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।
- अल्ट्रासाउंड क्लीनिकों (सोनोग्राफ़िक सेंटरों) की लेखापरीक्षा किए जाने की सिफ़ारिश की गई है।
- सरकार इस बात की सुनिश्चित व्यवस्था करे कि निजी तथा सरकारी दोनों चैनल इससे संबंधित संदेश/कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए कुछ समय अवश्य निर्धारित करें।

प्रोफ़ेसर पूनम अग्रवाल ने 'स्त्री-शिशुहत्या : समकालीन परिदृश्य, मुद्दे और चुनौतियाँ' विषय पर आयोजित एक दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया और 'स्त्री-भ्रूणहत्या-समस्या का विवेचनात्मक आकलन और संभावित सुधारात्मक उपाय' विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। यह संगोष्ठी दिनांक 16-17 मार्च 2007 को हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के महिला अध्ययन एवं विकास विभाग द्वारा आयोजित की गई थी। प्रो. अग्रवाल ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन एवं विकास केंद्र द्वारा 27-28 मार्च 2007 को '21वीं शताब्दी में महिला अध्ययन-विभिन्न पक्ष' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी भाग लिया और उसमें 'महिलाओं को भाषायी दृष्टि से दृश्यमान बनाना' विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने एक सत्र की अध्यक्षता भी की।

पुस्तक प्रणयन

कला शिक्षा

परिषद् ने अभी हाल में अध्यापकों के लिए एक संसाधन पुस्तक (कक्षा-9) निकाली है जो माध्यमिक स्तर पर कला विषयों के अध्यापकों के लिए है। यह पुस्तक कक्षा-9 में छात्रों द्वारा सीखी जाने वाली दृश्य तथा प्रदर्शन कलाओं की संकल्पनाओं पर केंद्रित है।

संसाधन पुस्तक की इकाइयाँ (अध्याय)

- इकाई-I दृश्यकलाएँ
- इकाई-II भारतीय संगीत : गायन और वाद्य
- इकाई-III मंचकलाएँ
- इकाई-IV भारत में नृत्य के उद्भव : भारतीय नृत्य रूपों में सामान्य रूप से पाए जाने वाले सिद्धांत और तकनीकें आदि।
- इकाई-V यह इकाई अध्यापकों को अधिक जागरूक बनाने के लिए तैयार की गई है ताकि वे इस जानकारी को छात्रों के बीच प्रचारित-प्रसारित कर सकें।

कलाओं के कुछ ऐसे अन्य क्षेत्र भी हैं जिनपर कक्षा-10 की संसाधन पुस्तक में विचार किया जाएगा। कला अध्यापकों के लिए तैयार की गई इस संसाधन पुस्तक में कुछ मार्ग निर्देश दिए गए हैं और अध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए स्वयं अपने व्यावसायिक कौशल तथा अध्यापन अनुभव की सहायता से इन विचारों को और विस्तृत कर सकेंगे।

पुस्तकालय

अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूर और शिलांग स्थित हमारे पाँच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान; भोपाल स्थित पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान; और केंद्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी) नयी दिल्ली के वरिष्ठ लाइब्रेरी अधिकारियों की एक बैठक 11-12 जनवरी 2007 को नयी दिल्ली में हुई।

इस बैठक का एक उद्देश्य यह पता लगाना था कि हम अपने संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग किस प्रकार कर सकते हैं और एनसीईआरटी के सभी क्षेत्रीय संस्थानों के अन्य पुस्तकालयों में सेवाओं को सुधारने के लिए क्या-क्या कदम उठाने की ज़रूरत है। इस बैठक का उद्देश्य था कि क्षेत्रीय संस्थानों के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और उसके पुस्तकालयों के व्यावसायिक स्टाफ की वार्षिक बैठक से परस्पर हित के विचारों के आदान-प्रदान में तथा पुस्तकालयों में प्रचलित प्रक्रियाओं तथा पद्धतियों को एक मानक रूप देने में किस प्रकार सहायता मिले, इस पर विचार-विमर्श करना। ज्ञान प्रबंधकों के रूप में पुस्तकालय स्टाफ की भूमिका की पहचान किए जाने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और उसके क्षेत्रीय संस्थानों के पुस्तकालयों के चौदह कार्मिकों ने इस बैठक में भाग लिया।

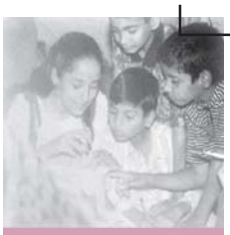

इस बैठक में मुख्यत: निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया गया

- बैठक में शिक्षा के राष्ट्रीय संसाधन केंद्र के विषय में अब तक की गई प्रगति की समीक्षा की गई और यह तय किया गया कि स्वचलीकरण के सभी आंतरिक कार्यकलापों के कार्यान्वयन को सक्रिय बनाया जाए।
- यह तय किया गया कि ई-संसाधनों का मिलकर उपयोग करने के लिए एनसीईआरटी कंसोर्टियम का समारंभ किया जाए।
- यह निर्णय लिया गया कि सभी पुस्तकालय लाइब्रेरी वेबसाइट की योजना बनाएँ और उसे डीएडीआई से जोड़ें।
- पुस्तकालयों की अकादमिक भूमिका पर भी बल दिया गया और इस बात पर सहमति हुई कि डीएलडीआई और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा एससीईआरटी, एसआईई और डीआईईटी संस्थाओं के पुस्तकालयाध्यक्षों/प्रभारी पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

एनसीईआरटी कंसोर्टियम के माध्यम से संसाधनों के सम्मिलित उपयोग के लिए एनआईई और उसके क्षेत्रीय संस्थानों के पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण से संबंधित महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई और उसके बाद लिबसिब, इन्फोर्मेटिक्स इंडिया लि., टेकफोकुंज और ग्लोबल इन्फॉर्मेशन सिस्टम प्रा. लि. द्वारा की गई प्रस्तुतियों एवं प्रदर्शनों में भाग लेने वाले कार्मिकों को अद्यतन जानकारी मिली जिससे उनकी व्यावसायिक कुशलता में सुधार की आशा है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

पूर्वोत्तर क्षेत्र की एससीईआरटी, एसआईई और डीआईटी संस्थाओं के पुस्तकालयाध्यक्षों/पुस्तकालय प्रभारियों के अभिविन्यास एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण का उद्देश्य एआईएस कार्मिकों के कौशल और ज्ञान को तेज और अद्यतन बनाना और सीमित संसाधनों की उपलब्धता की सीमाओं के भीतर रहते हुए नवीनतम प्रौद्योगिकी का उपयोग करके आदर्श पुस्तकालय विकसित करने के लिए सहभागियों को पर्याप्त व्यावहारिक ज्ञान से संपन्न करना था। इसके अलावा एक ऐसे मंच की व्यवस्था करना था जहाँ पुस्तकालय तथा सूचना व्यावसायिकों के बीच विचारों का आदान-प्रदान हो सके और उन्हें सूचना विज्ञान तथा तत्संबंधी सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों के क्षेत्रों में हुए नवीनतम विकास कार्यों के बारे में अद्यतन जानकारी मिल सके।

इस पाँच-दिवसीय कार्यक्रम में अट्ठाईस पुस्तकालय व्यावसायिकों/परा-व्यावसायिकों ने भाग लिया।

चर्चित बिंदु

- पुस्तकालय संबंधी नियम, संग्रह का विकास, पुस्तकों का प्रक्रमण, पत्र-पत्रिकाओं का अनुरक्षण और जिल्दबंदी, वर्गीकरण, कैटलॉग एवं सूचक तैयार करना, सार लेखन मेटा डाटा आदि के बारे में ज्ञान का संगठन, उपयोगकर्ताओं की सुनिर्धारित आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त शैक्षिक कार्यक्रमों का विकास।

सहभागियों को पुस्तकालय में कंप्यूटर के उपयोगों से परिचित कराया गया। विनसिस का प्रयोग करते हुए वर्गीकरण और सूचीकरण ग्रंथवृत्तात्मक डेटाबेस के विकास के बारे में सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी दी गई। आरडीआईसी, पूर्वोत्तर परिषद् पुस्तकालय को दिखलाने की भी व्यवस्था की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अपनाई गई कार्यविधि में विषय के विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान, सहभागियों द्वारा प्रस्तुतियाँ, सामूहिक कार्य और अन्योन्य क्रियात्मक एवं सहभागितात्मक कार्यकलाप शामिल थे। प्रशिक्षण में चर्चित विषयों पर बारह शोधपत्रों का एक संकलन प्रत्येक सहभागी को प्रशिक्षण सामग्री के रूप में दिया गया।

सहभागियों ने पुस्तकालय एवं सूचना प्रबंध की तकनीकों में गहरी रुचि दिखलाई और पुस्तकालय संबंधी वर्गीकरण तथा सूचीकरण के व्यावहारिक अभ्यासों में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने पुस्तकों से संबंधित मानक सूचीगत अभिलेख तैयार करने के लिए पुस्तकालय सॉफ्टवेयर और कंप्यूटर के बारे में बुनियादी जानकारी प्राप्त करने में गहरी रुचि दिखलाई। पुस्तकालय का प्रबंध करने और उपयोगकर्ताओं को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने में उन्होंने अपने आपको अधिक आश्वस्त एवं सक्षम महसूस किया। उनके मूल्यांकन के अनुसार यह कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी रहा।

स्कूली पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण के लिए स्कूली पुस्तकालयाध्यक्षों की क्षमता का निर्माण

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में स्कूली पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण के लिए स्कूली पुस्तकालयाध्यक्षों में क्षमता निर्माण विषय पर एक पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने से पहले क्षेत्रीय समन्वयकर्ताओं को आमंत्रित करते हुए, विशेषज्ञ समूह की पहली क्रियाकलाप नियोजन बैठक 7 से 8 मार्च 2007 तक डीएलडीआई, एनसीईआरटी में आयोजित की गई।

इस बैठक का उद्देश्य कार्यक्रम के लिए लक्ष्य समूह का निर्धारण करना, सर्वेक्षण के माध्यम से लक्ष्य समूह की आवश्यकताओं का आकलन करना, प्रश्नावली तैयार करना और प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों पर चर्चा करना था।

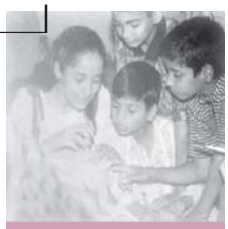

इस बैठक में कार्यक्रम के लिए लक्ष्य समूह निर्धारित किया गया तथा पाठ्य-सामग्री के भिन्न-भिन्न माड्यूलों के लिए विषयों को अंतिम रूप दिया गया।

कार्यानुसंधान पर डीईआरपीपी (शैक्षिक अनुसंधान और नीति परिप्रेक्ष्य विभाग) की संगोष्ठी

कार्यानुसंधान पर एक तीन-दिवसीय राज्य स्तरीय संगोष्ठी गुवाहाटी में 30 मार्च से 1 अप्रैल 2007 तक एससीईआरटी, असम और एसएसए, असम के सहयोग से आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में 30 क्षेत्रस्थ कार्मिकों ने भाग लिया, जिनमें असम के तीन ज़िलों के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक शामिल थे। इनके अलावा, 'डाइट' तथा एससीईआरटी के कुछ संकाय सदस्यों ने कार्यानुसंधान संबंधी अपने निष्कर्षों का आदान-प्रदान किया। ये कार्यानुसंधान एनसीईआरटी की क्षमता निर्माण परियोजनाओं के अंतर्गत पूरे किए गए थे और उन्हें बोरो, असमिया, बंगला और अंग्रेज़ी भाषाओं में पढ़कर सुनाया गया। यह संगोष्ठी एक द्विवर्षीय परियोजना की समाप्ति पर आयोजित की गई थी जिसे एनसीईआरटी के शैक्षिक अनुसंधान और नीति परिप्रेक्ष्य विभाग ने असम के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों और अन्य क्षेत्रस्थ कार्मिकों में कार्यानुसंधान में क्षमता निर्माण संबंधी कार्यक्रम के रूप में आरंभ किया था। इस परियोजना की सफलता से प्रेरित होकर विभाग ने एमएससीईआरटी, पुणे के साथ मिलकर, महाराष्ट्र के प्रारंभिक विद्यालयों के अध्यापकों में कार्यानुसंधान में ऐसी ही क्षमता निर्माण संबंधी परियोजना आरंभ की है।

डाक्टरेट के लिए एनसीईआरटी की अध्येतावृत्ति

एनसीईआरटी ने शिक्षा के क्षेत्र में और शिक्षा-संबंधी अन्य विषय क्षेत्रों में डाक्टरेट के लिए दस अध्येतावृत्तियाँ प्रदान करने के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए हैं। इन अध्येतावृत्तियों का उद्देश्य उन युवा अध्येताओं को प्रोत्साहित करना है जो किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय में अथवा शोध संस्थान में डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने के लिए शोधकार्य करना चाहते हैं। ये अध्येतावृत्तियाँ उन क्षेत्रों में शोधकार्य के लिए दी जाएँगी जिन्हें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में महत्त्वपूर्ण मानकर प्राथमिकता दी गई है। ये क्षेत्र हैं–सुविधा-वंचितों की शिक्षा, पाठ्यचर्या संबंधी क्षेत्र, शांति के लिए शिक्षा और बच्चों का मनोवैज्ञानिक विकास।

चुने गए अध्येताओं को 8000 रु. प्रतिमास अध्येतावृत्ति मिलेगी और अधिकतम तीन वर्ष तक प्रति वर्ष 10,000 रु. आकस्मिकता अनुदान मिलेगा। आवेदन पत्र के साथ सूचना विवरणिका तैयार की जा चुकी है और वह एनसीईआरटी के वेबसाइट पर उपलब्ध है।

उपलब्धियाँ

- **भारतीय छायाचित्र कला : आदि से आधुनिक काल तक :** डॉ. सुनील कुमार को उनकी पुस्तक 'भारतीय छायाचित्र कला : आदि से आधुनिक काल तक' के लिए, तकनीकी पुस्तक पुरस्कार 2005-06 श्रेणी के अंतर्गत, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार (द्वितीय) से सम्मानित किया गया है।

- **पुरस्कार :** श्रीमती रेखा अग्रवाल को पुस्तकों तथा पत्रिकाओं के माध्यम से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार में उत्कृष्ट प्रयत्न के लिए 2006 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह पुरस्कार राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के अंतर्गत 1,00,000 रु. की नकद राशि के रूप में है, जो उन्हें एक विज्ञान लेखक, स्तंभ लेखक, प्रसारक और साहित्यकार के रूप में उनके योगदान के लिए दिया गया है।
- **साउंड्स ऑफ साइलेंस (मौन ध्वनियाँ):** व्याख्याता श्री मेघनाथन द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक उनकी उन कविताओं का संकलन है जो उन्होंने पिछले एक दशक में ऐसे लोगों, घटनाओं तथा प्रसंगों पर लिखी हैं जिनसे उनका जीवन और विचार उद्वेलित एवं प्रभावित हुए हैं। ये कविताएँ प्रकृति से लेकर शिक्षा, राजनीति, प्यार, दु:ख-दर्द जैसे विभिन्न विषयों पर लिखी गई हैं। इन कविताओं के माध्यम से लेखक ने पाठकों को इस पुस्तक में अभिव्यक्त विचारों एवं विषयों पर सोचने के लिए उत्तेजित करने का प्रयत्न किया है। इनमें से कुछ कविताएँ प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। साहित्यिक पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों में इस पुस्तक की समीक्षा छप चुकी है।

एनसीईआरटी में अनुसंधान के लिए संसाधन सहायता कार्यक्रम

शैक्षिक अनुसंधान को प्रोत्साहन देना और स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए अनुसंधान आधारित नीतिगत परिप्रेक्ष्यों को बढ़ावा देना एनसीईआरटी का महत्त्वपूर्ण सरोकार है। एनसीईआरटी में इन सरोकारों को पूरा करने के लिए नियमित रूप से

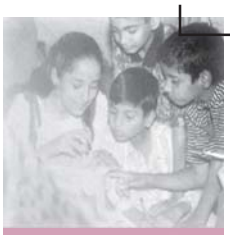

आवश्यकता-आधारित अनुसंधानों का संचालन करता है। इसलिए इस हेतु कनिष्ठ सहयोगियों को एनसीईआरटी के आंतरिक अनुसंधान संबंधी क्रियाकलापों पर आवश्यकतानुसार ध्यान देना होता है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत परिप्रेक्ष्य विभाग ने एनसीईआरटी के नए संकाय सदस्यों की क्षमता के निर्माण द्वारा अनुसंधान की एक संस्कृति की रचना एवं उसके पालन-पोषण के लिए एक पाँच-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर में 16 से 20 जनवरी 2007 तक चला और उसमें एनसीईआरटी की भिन्न-भिन्न घटक इकाइयों से चुने गए 27 संकाय सदस्यों ने भाग लिया। अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में सहभागियों द्वारा शोधकार्य पूरा किए जाने के बाद उनके अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए वर्ष 2007-08 के अंतिम दिनों में एक संगोष्ठी आयोजित किए जाने का प्रस्ताव है।

सारांश और प्रकाशन

संकल्पना मानचित्रण के माध्यम से परावर्तन और अपवर्तन सीखने में संकल्पनात्मक संरचना में परिवर्तन

यह प्रयोगात्मक अध्ययन 2005-06 के दौरान क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अजमेर में किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्षों पर आधारित शोधपत्र डॉ. शशि प्रभा द्वारा जनवरी 2007 में चिदंबरम में भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ को प्रस्तुत किया गया।

हाल के वर्षों में संकल्पना मानचित्रण विज्ञान की शिक्षा में शिक्षार्थियों की संकल्पनात्मक समझ को विकसित करने के क्षेत्र में एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरा है। गुड, नोवाक और वांडरसी 1990, 'मारकम, मिंट्ज़ और जोन्स 1994, वांडरसी मिंट्ज़ और नोवाक 1994, राई, रुब्बा 1998' वर्तमान अध्ययन का प्रयोजन, कक्षा-X के स्तर पर संकल्पना मानचित्रण के माध्यम से प्रकाश के परावर्तन एवं अपवर्तन से संबंधित संकल्पनात्मक संरचनाओं में परिवर्तन की खोज करना है।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यादृच्छिक प्रयोग समूह (43 छात्र) और नियंत्रण समूह (43 छात्र) बनाए गए और उन पर परीक्षण-पूर्व और परीक्षण-पश्चात् प्रयोगात्मक डिज़ाइन लागू किए गए। छात्रों के संकल्पनात्मक परिवर्तन के उपाय के रूप में बीसियों उपलब्धि परीक्षण किए गए। उपलब्धि के वितरण का संक्षेप रूप तैयार करने के लिए बॉक्स प्लाटों को काम में लिया गया। इन समूहों पर किए गए अनोखे परीक्षण ने इस परिकल्पना का समर्थन किया कि प्रकाश के परावर्तन एवं अपवर्तन की संकल्पनाओं के साथ पूर्ववर्ती ज्ञान समान रहने पर, परीक्षण के अधीन छात्रों ने परंपरागत रूप से पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में अधिक उपलब्धि दर्शाई। पूर्ववर्ती समूह ने अपने आपको उपर्युक्त संकल्पनाओं के अनुप्रयोगों के साथ अधिक सक्षम पाया। इन परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संकल्पना मानचित्रण को अभिप्रेत संकल्पनात्मक परिवर्तन लाने के लिए एक शैक्षणिक रणनीति के रूप में काम में लाया जा सकता है।

पहाड़ी लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभवों को समझना (अंडरस्टैंडिंग दि सोशो-कल्चरल एक्सपीरिएंसेज ऑफ पहाड़ी फोक) - मिली रॉय आनंद, इंडियन फोकलोर रिसर्च जर्नल, खंड-3, अंक 6

उत्तर भारतीय समाज एवं संस्कृति के बारे में अधिकांश अनुमान वास्तव में गंगा-सिंधु नदियों के मैदान के अनुमान के आधार पर लगाए जाते हैं। केंद्रीय हिमालय क्षेत्र जिसमें कुमाऊँ और गढ़वाल (अब उत्तराखंड) शामिल हैं, अधिकतर सूचना के अभाव में अथवा इस क्षेत्र के प्रति विद्वानों में उदासीनता होने के कारण, बहुत-कुछ उपेक्षित रहा है। आदिकाल से ही भौगोलिक कारकों ने इस क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति को स्वरूप प्रदान करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। एक अन्य कारक जिसने उत्तराखंड की संस्कृति में योगदान दिया है वह है इस क्षेत्र में आकर बसने वाले जनसमुदायों का प्रवाह जो गंगा के मैदानों, पंजाब और राजस्थान से विशेष रूप से मध्यकाल में आया। इन आप्रवासियों के प्रभाव को कुमाऊँ तथा गढ़वाल के लोगों के धार्मिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहारों एवं रीति-रिवाजों में देखा जा सकता है। यह विशेष रूप से उत्तराखंड के समृद्ध लोक साहित्य में दृष्टिगोचर होता है जो इस क्षेत्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशाओं पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डालता है।

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के संकाय सदस्यों के प्रकाशन

- डॉ. तूलिका डे, व्याख्याता, 'डेरेडम' ने भारतीय भूवैज्ञानिक संघ की पत्रिका के खंड 39 (1, 2) में पृ. 29-39, आईएसएसएन 0379-5098, पर एक शोध-पत्र प्रकाशित किया, जिसका शीर्षक है: 'स्ट्रक्चर एंड जीओ केमिस्ट्री ऑफ मैटाबैसाइट्स फ्रोम चंद्रपुर-नारेंगी एरिया ऑफ गुवाहाटी सिटी, कामरूप डिस्ट्रिक्ट, असम'।
- 'सेंटिनल मेलांज', गुवाहाटी, असम, खंड XXIV, अंक 14, पृ. 1, दिनांक 25 फ़रवरी 2007, में 'जोयफुल लर्निंग' शीर्षक निबंध प्रकाशित हुआ।

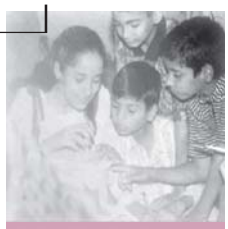

संक्षेप

अनुसंधान संबंधी क्रियाकलाप को बढ़ावा देने के लिए क्षमता निर्माण

सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत अनुसंधान संबंधी क्रियाकलापों को बढ़ावा देने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के राज्य तथा ज़िला स्तरीय कार्यकर्ताओं के लिए क्षमता निर्माण विषय पर एक पाँच-दिवसीय कार्यक्रम नीरी, शिलांग में 5 से 9 मार्च 2007 तक आयोजित किया गया। असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम और नागालैंड के सर्वशिक्षा अभियान से संबंधित राज्य तथा ज़िला स्तरीय कार्यकर्ताओं ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इसमें अनुसंधान (कार्यानुसंधान पर विशेष बल देते हुए) के विभिन्न पक्षों पर विचार किया गया; जैसे, आवश्यकता और महत्त्व, प्रकार, अनुसंधान संबंधी समस्याओं का पता लगाना; उद्देश्यों की सूची बनाना; परिकल्पना का निर्माण करना, अनुसंधान उपकरणों का विकास करना, आँकड़े इकट्ठे करना, विश्लेषण करना, डाटा प्रस्तुत करना और रिपोर्ट लिखना। इन पक्षों पर व्याख्यान के माध्यम से अभ्यास करने के बाद सामूहिक प्रस्तुति की गई। इस कार्यक्रम का समन्वय संयुक्त रूप से डॉ. बी. देवी (डीसीडीईवीई) और श्री टी. न्यूमेई (डीईआरडीएम) द्वारा किया गया।

प्रारंभिक स्तर पर प्रभावपूर्ण पठन एवं लेखन कौशलों को बढ़ावा देना

पूर्वोत्तर राज्यों के प्रमुख विषय विशेषज्ञों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम 5 से 9 मार्च 2007 तक डॉन बोस्को यूथ सेंटर, शिलांग में आयोजित किया गया। इसमें छब्बीस अध्यापक प्रशिक्षकों ने भाग लिया जो असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम के विभिन्न डाइट/एससीईआरटी संस्थानों से आए थे और कुछ अध्यापक असम और मेघालय के भी थे। कार्यक्रम का समन्वय प्रो. ए.के. मिश्रा, डीएलएसएसएपीई द्वारा किया गया।

संकाय समाचार–पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

- डॉ. सरजूबाला देवी (डीएलएसएसएपीई) और श्री के.एच. विजय कुमार (डीसीडीईवीई) ने 18 से 20 फ़रवरी 2007 तक राजकीय केंद्रीय पुस्तकालय शिलांग में, भारत की पूर्वी भाषाओं (मणिपुरी, असमिया और बोडो) में वैज्ञानिक तथा तकनीकी पारिभाषिक शब्दावलियों के अनुवाद की समस्याओं तथा संभावनाओं पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। यह कार्यक्रम वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा आयोजित किया गया था।
- डॉ. एन.सी. ओझा (डीईआरईडीएम) ने 11 से 12 जनवरी 2007 तक बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश में 'युवा और राष्ट्र का पुनर्निर्माण' विषय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
- डॉ. ए.सी. बोराह (डीईएसएम एंड आईसीटी) ने 24 से 26 फ़रवरी 2007 तक सीआईई, दिल्ली विश्वविद्यालय में, ई-अधिगम विषय पर कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग तथा केंद्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- प्रो. ए.के. मिश्रा (डीएलएसएसएपीई) ने 14 से 15 फ़रवरी 2007 तक नयी दिल्ली में विद्यालय शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत जनजातीय क्षेत्रों के लिए बहुभाषायी शिक्षा' विषय पर आयोजित एक राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया और 'पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में बहुभाषायी शिक्षा के लिए गुंजाइश' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर राज्य के कार्यकर्ताओं का अभिविन्यास' विषय पर एक पाँच-दिवसीय कार्यक्रम 26 से 30 मार्च 2007 तक नीरी-एनसीईआरटी, शिलांग में हुआ। इस कार्यक्रम में असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड और मेघालय के 23 'डाइट' व्याख्याताओं ने भाग लिया। बाहर से आए विषय विशेषज्ञ थे : श्री डी.के. रिनता थिआंग, फादर पी.डी. जोनी, श्री दिलीप बरुआ और डॉ. वी. खर्माव फलांग। आंतरिक विशेषज्ञों में शामिल थे : जे.पी. बागची, डॉ. एन.सी. ओझा, डॉ. एफ.जी. डरवार (डीईआईईडीएम) और डॉ. एस.सी. रॉय (डीएलएसएसएपीई)। इस कार्यक्रम का समन्वयन संयुक्त रूप से डॉ. एफ.जी. डरवार और प्रो. जे.पी. बागची ने किया।
- "शिक्षा प्रौद्योगिकी की समझ और प्रयोग में प्रमुख संसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण विषय पर एक पाँच-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 19 से 23 मार्च 2007 तक गुवाहाटी में आयोजित किया गया। अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय और असम के 10 'डाइट' संकायों ने और असम के छह स्कूली अध्यापकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। बाहरी संसाधन व्यक्ति थे–प्रो. पी.के. भट्टाचार्जी, सीआईईटी, एनसीईआरटी; श्री धरणि सायकिया, पर्यावरण शिक्षा केंद्र,

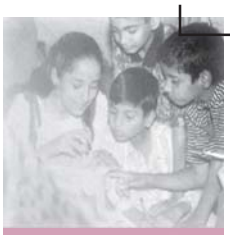

गुवाहाटी, डॉ. हृषीकेश बरुआ, आर्य विद्यापीठ कॉलेज, गुवाहाटी और श्री के.के. डेका, एम आई एंड बी, गुवाहाटी। आंतरिक संसाधन व्यक्ति थे : डॉ. टी. डे, प्रो. जे.पी. बागची, डॉ. एन.सी. ओझा (डीईआरईडीएम) और डॉ. ए.के. गर्ग (डीईएसएम खंड आईसीटी)। कार्यक्रम के उद्देश्य की प्राप्ति, प्रमुख विषय विशेषज्ञों को विद्यालयों में शिक्षा प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन के क्षेत्र के प्रमुख तर्कों और विचारों से परिचित करा के की गई।" इस कार्यक्रम के दौरान व्यापक चर्चा के साथ-साथ सहभागियों को विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में प्रायोगिक अनुभव कराया गया। डॉ. तूलिका डे और प्रो. जे.पी. बागची (डीईआरईडीएम) ने संयुक्त रूप से इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

- पूर्वोत्तर राज्यों के प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए, 'आपदा प्रबंधन के रूप में पर्यावरण शिक्षा' विषय पर एक कार्यशाला-एवं-प्रशिक्षण कार्यक्रम मार्च 2007 में कालियाबोर-असम में आयोजित किया गया। प्रो. एम.के. शतपथी (डीईएसएम एंड आईसीटी) इस कार्यक्रम के समन्वयकर्ता थे। "पूर्वोत्तर राज्यों में माध्यमिक स्तर पर इतिहास के अध्यापन-अधिगम की अनुपूर्ति के लिए स्थानीय विशिष्ट सामग्रियों का विकास" विषय पर एक चार-दिवसीय कार्यशाला नीरी-एनसीईआरटी, शिलांग में 21 से 24 मार्च 2007 तक आयोजित की गई। कार्यशाला में उन सामग्रियों, रणनीतियों और कार्यविधियों पर चर्चा की गई जिन्हें अध्यापकों की हैंडबुक में शामिल किया जाएगा। इस हैंडबुक में पूर्वोत्तर क्षेत्र के इतिहास के टुकड़ों को राष्ट्रीय तथा विश्वस्तरीय घटनाओं के साथ जोड़ा जाएगा जैसा कि मुख्य पाठ्यपुस्तक में किया गया है। नागालैंड, असम, मणिपुर, त्रिपुरा और मेघालय के विश्वविद्यालयों के बारह विषय विशेषज्ञों तथा कुछ कॉलेज व्याख्याताओं तथा स्कूली अध्यापकों ने भाग लिया। डॉ. सीमा सैगल (डीएलएसएसएपीई) ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

एनसीएफ-2005 के विषय में अध्यापक प्रशिक्षकों का अभिविन्यास, 'एजूसैट' नेटवर्क के माध्यम से

पाठ्यचर्या समूह ने 18 जनवरी से 9 फ़रवरी 2007 तक 'एजूसैट' नेटवर्क के माध्यम से अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए एनसीएफ-2005 पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया। आंध्र प्रदेश, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल के लगभग 4,000 प्रारंभिक और माध्यमिक स्तर के अध्यापक प्रशिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

एनसीईआरटी के संकाय, राष्ट्रीय संचालन समिति और राष्ट्रीय फोकस ग्रुपों से लिए गए 59 विशेषज्ञों ने सहभागियों से विचारों का आदान-प्रदान किया। इन विचार-विनिमय सत्रों के दौरान विशेषज्ञों ने पाठ्यविषयों, राष्ट्रीय सरोकारों और प्रणालीगत सुधारों से संबंधित विचारों एवं सिफ़ारिशों पर गंभीरतापूर्वक विचार-विमर्श किया। प्रशिक्षणार्थियों ने अनेक प्रश्न पूछे और चिंतनशील विचारों का आदान-प्रदान किया जिससे ऐसा लगा कि उनमें एनसीएफ़-2005 के बारे में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता है।

विदेशी प्रतिनिधि मंडल

- भारतीय स्कूल पद्धति के बारे में जानने और भविष्य में भारतीय शिक्षा संगठनों के साथ सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से 2 फ़रवरी 2007 को चीन के एक छह-सदस्यीय शिष्टमंडल ने एनसीईआरटी का दौरा किया। शिष्टमंडल ने दोनों देशों में प्रचलित शिक्षा प्रणालियों के बारे में जानकारी का आदान-प्रदान किया।
- दक्षिण अफ्रीका के एक उच्चस्तरीय छह-सदस्यीय शिष्टमंडल ने 15 फ़रवरी 2007 को एनसीईआरटी का दौरा किया। शिष्टमंडल ने कुछ विशिष्ट विषयों पर एनसीईआरटी संकाय के साथ चर्चा की। ये विषय थे : ग्रामीण शिक्षा, ज़िला प्रबंध तथा प्रशासन और गणित, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में शिक्षा।
- तंजानिया के एक तीन-सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने 22 फ़रवरी 2007 को एनसीईआरटी का दौरा किया और विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा के बारे में विस्तार से चर्चा की।

स्टाफ समाचार

सेवानिवृत्तियाँ

- श्री सतराम, सीनियर हेल्पर, 28.02.07 को सेवानिवृत्त।
- श्री प्रकाश सिंह, सुरक्षा गार्ड, 28.02.07 को सेवानिवृत्त।
- श्रीमती हरभेजी, सफाईवाली, 28.02.07 को सेवानिवृत्त।
- श्री रत्तन सिंह, पैकर, 31.03.07 को सेवानिवृत्त।

नियुक्तियाँ

- श्री अमिताभ कुमार को दिनांक 26-12-06 को प्रकाशन विभाग में मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव के पद पर नियुक्त किया गया।
- श्री राजकुमार चपरासी को 08.02.07 को कनिष्ठ लेखाकार के रूप में नियुक्त किया गया।

निधन-सूचना

- एनसीईआरटी श्री रामकुमार सफाईवाले के निधन (27-02-07) को) पर गहरा शोक प्रकट करती है।

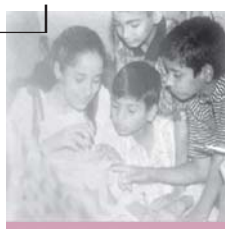

गुरुवारीय व्याख्यान मंच

डीईआरपीपी द्वारा गुरुवारीय व्याख्यान माला के अंतर्गत निम्नलिखित व्याख्यान आयोजित किए गए:

- 'इंग्लैंड में प्राथमिक शिक्षा की समीक्षा', द्वारा प्रो. रोबिन एलेक्जेंडर, कैंब्रिज विश्वविद्यालय, यू.के., दिनांक 25 जनवरी 2007
- 'शिक्षा में प्रौद्योगिकी के समावेश पर अनुसंधान', द्वारा प्रो. एम. ए. सिद्दीकी, जे.एम.आई., नयी दिल्ली; दिनांक 8 फ़रवरी 2007
- 'भविष्य के लिए समवेत शिक्षा', द्वारा प्रो. दीपक लाहेरी, काउंसिल ऑफ स्कूल, स्टाक होम, स्वेडन, दिनांक 15 फ़रवरी 2007
- 'उच्च ऊँचाइयों पर बच्चों को शिक्षा देना', द्वारा गार्गी बैनर्जी, निदेशक, रितिका परियोजना, दिनांक 22 फ़रवरी 2007
- 'चिंतनशील अध्यापक-अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था', द्वारा प्रो. डी.डी. यादव, डीटीईई, एनसीईआरटी, नयी दिल्ली, दिनांक 1 मार्च 2007
- 'आज की शिक्षा में गांधी जी की प्रासंगिकता', द्वारा प्रो. सी. वी. वेणुगोपाल (से.नि.), कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़, दिनांक 22 मार्च 2007

पोस्टर शृंखला के लिए नारा (स्लोगन)

एनसीईआरटी एक शिक्षा-आधारित पोस्टर शृंखला विकसित करना चाहती है। इस शृंखला के लिए उपयुक्त नारे प्रस्तुत करने के लिए एनसीईआरटी के संकाय सदस्य एवं कर्मचारीगण आमंत्रित हैं। तत्पश्चात् एक समिति उपयुक्त नारों का चयन करेगी और इन पोस्टरों में उनका उपयोग करेगी। इन नारों के विषय शिक्षोपयोगी होने चाहिए; जैसे–बच्चों को स्कूलों में बनाए रखना, बीच में पढ़ाई नहीं छुड़ाना; साक्षरता को प्रोत्साहन; स्कूली बच्चों में लैंगिक संवेदनशीलता, क्रियाकलाप आधारित शिक्षा; बहुभाषावाद; शिक्षा में कलाओं और सांस्कृतिक परंपराओं का समावेश; विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के बीच पढ़ाई करना आदि।

नारे डॉ. ज्योत्सना तिवारी, कला एवं सौंदर्यशास्त्र शिक्षा विभाग (डीईएए), एनसीईआरटी, नयी दिल्ली के पास भिजवाए जाएँ।

कृपया ध्यान रखें कि यह कोई प्रतियोगिता नहीं है।

प्रकाशन मंडल

पी. राजाकुमार — नीरजा रश्मि
श्वेता उप्पल — रेखा अग्रवाल
अरुण चितकारा

वेबसाइट: www.ncert.nic.in, ई-मेल: publica@nda.vsnl.net.in
प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा गीता ऑफसेट प्रिन्टर्स, सी-90, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नयी दिल्ली 110020 में मुद्रित।

पिछला हाशिया

चालीस वर्ष पहले कोठारी आयोग ने यह कल्पना की थी कि हमारे विश्वविद्यालय एक न एक दिन स्कूली शिक्षा के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को स्वीकारेंगे। आयोग ने अपनी ऐतिहासिक रिपोर्ट में सिफ़ारिश की थी कि विश्वविद्यालय नियमित रूप से प्रारंभिक और माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था करें। आज शायद ही कोई व्यक्ति कोठारी आयोग की इस अनुशंसा को याद करता हो। गर्मी की लंबी छुट्टियों में विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के परिसर बिलकुल उजाड़ दिखाई देते हैं। अप्रैल में परीक्षा समाप्त हो जाने के बाद इन परिसरों में लगभग सारी नियमित गतिविधियाँ बंद-सी हो जाती हैं। इमारतों, उनमें उपलब्ध सुविधाओं और विश्वविद्यालयों के बौद्धिक संसाधनों का यह अपव्यय साल दर साल होता है। विश्वविद्यालयों के कई वरिष्ठ प्रधानाध्यापक गर्मियों की छुट्टियों में विदेशों में स्थित संस्थाओं में काम करने निकल जाते हैं।

ग्रीष्मावकाश में अमेरिकी और यूरोपीय विश्वविद्यालय ऐसे लोगों के लिए विशेष पाठ्यक्रम चलाते हैं जो नियमित रूप से साल भर पढ़ाई नहीं कर सकते। इन ग्रीष्मकालीन छात्रों में बहुत से स्कूली अध्यापक और जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में नौकरी करने वाले सामान्य नागरिक होते हैं। उनकी बदौलत अमरीकी और यूरोपीय विश्वविद्यालयों, परिसरों में गर्मियों भर चहल-पहल रहती है। पुस्तकालय भी इन अंशकालिक प्रौढ़ छात्रों के लिए खोल दिए जाते हैं।

यदि कोठारी आयोग की सिफ़ारिश को आज पुनर्जीवित करना हो तो पहला कदम होगा कि स्कूली अध्यापकों को कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों की पुस्तकालयी सदस्यता दी जाये। इस तरह राजधानी दिल्ली में ही स्कूली शिक्षकों को अचानक लगभग 80 पुस्तकालय मिल जायेंगे। यदि यह व्यवस्था देशभर में लागू की जाती है तो लाखों स्कूली शिक्षकों को अपने विषय की गहन पढ़ाई करने का और पत्र-पत्रिकाएँ देखने-पढ़ने का फिलहाल एक दुर्लभ अवसर मिल जायेगा। यदि कालेज और विश्वविद्यालय स्कूली अध्यापकों के लिए छुट्टियों में प्रशिक्षण की व्यवस्था कर देते हैं तो विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों की यह पुरानी शिकायत भी धीरे-धीरे बेमानी हो जायेगी कि उनके विद्यार्थी वह ज्ञान और कौशल पाये बगैर कालेज में पहुँच जाते हैं जो उन्हें स्कूलों में मिलना चाहिए था। इस तरह के रूढ़िबद्ध विचार उस दोषखोजी दृष्टि तथा अकर्मण्यता को ही बढ़ाते हैं जो हमारे चारों ओर फैली हुई हैं। यदि उच्च शिक्षा देने वाली संस्थाएँ स्कूली शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में सक्रिय रुचि लें तो कुछ ही वर्षों में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता भी बढ़ जायेगी। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अंतर्गत समाज विज्ञानों की पढ़ाई को लेकर नियुक्त किये गये राष्ट्रीय फोकस समूह के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर गोपाल गुरु से जब किसी ने पूछा कि वह स्कूली शिक्षा से संबंधित गतिविधियों में इतना वक्त क्यों लगा रहे हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि उनके इस प्रयास से शायद अगले कुछ वर्षों में उनके पास आने वाले पोस्ट-ग्रेजुएट छात्रों की गुणवत्ता सुधर जाये।

कृष्ण कुमार